Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

हरित क्रांति और हरियाणा की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में परिवर्तनः 1966 से 2000 तक एक ऐतिहासिक अध्ययन

सन्तरो कुमारी
शोधार्थी, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक
Sawitachopra9398@gmail.com, Registration No. – 23-BMU-7230

डॉ. राजबीर सिंह गुलिया
प्रोफेसर, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय अस्थल बोहर रोहतक

सारांश
हरियाणा की ग्रामीण अर्थव्यवस्था के इतिहास में 1966 से 2000 तक की अवधि अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रही। 1966 में पृथक राज्य के रूप में अस्तित्व में आने के समय हरियाणा मुख्यतः कृषि प्रधान क्षेत्र था, जहाँ ग्रामीण जनसंख्या की आजीविका खेती, पशुपालन और कृषि श्रम पर आधारित थी। इसी काल में भारत में हरित क्रांति की नई कृषि रणनीति लागू हुई, जिसके अंतर्गत उच्च उपज देने वाली बीज किस्में, सिंचाई सुविधाएँ, रासायनिक उर्वरक, कृषि यंत्रीकरण, संस्थागत ऋण, मंडी व्यवस्था और सरकारी खरीद प्रणाली को प्रोत्साहन मिला। हरियाणा ने इन साधनों को तेजी से अपनाया और कुछ दशकों के भीतर देश के प्रमुख खाद्यान्न उत्पादक राज्यों में स्थान बना लिया। प्रस्तुत शोध–पत्र में 1966–67 से 1999–2000 तक की अवधि के आधार पर हरित क्रांति के कारण हरियाणा की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में आए परिवर्तनों का ऐतिहासिक विश्लेषण किया गया है। आधिकारिक संशोधित आँकड़ों के अनुसार राज्य का कुल खाद्यान्न उत्पादन 1966–67 के 25.92 लाख टन से बढ़कर 1999–2000 में 130.65 लाख टन हो गया। गेहूँ उत्पादन 10.59 लाख टन से बढ़कर 96.50 लाख टन तथा धान उत्पादन 2.23 लाख टन से बढ़कर 25.83 लाख टन हो गया। इसी अवधि में सिंचाई का विस्तार, गेहूँ–धान फसल चक्र का विकास, कृषि बाजार का विस्तार, कृषि ऋण और पशुपालन का व्यावसायीकरण ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रमुख परिवर्तनकारी तत्त्व बने। दूसरी ओर, दलहनी फसलों का ह्रास, भूजल पर दबाव, मिट्टी की उर्वरता में गिरावट, रासायनिक निवेश पर निर्भरता और छोटे किसानों तथा कृषि मजदूरों की असुरक्षा जैसी समस्याएँ भी सामने आईं। इस प्रकार हरित क्रांति ने हरियाणा की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को उत्पादन और बाजार की दृष्टि से सशक्त बनाया, किन्तु इसके साथ सामाजिक और पर्यावरणीय असंतुलन भी उत्पन्न हुए।

मुख्य शब्दः हरित क्रांति, हरियाणा, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, कृषि आधुनिकीकरण, सिंचाई, गेहूँ–धान फसल चक्र, कृषि यंत्रीकरण, ग्रामीण परिवर्तन, पर्यावरणीय संकट।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

प्रस्तावना

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् कृषि क्षेत्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार था। देश की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती थी और उसकी आजीविका भूमि, पशुधन तथा कृषि श्रम से जुड़ी हुई थी। फिर भी 1950 और 1960 के दशकों में कृषि उत्पादन जनसंख्या की बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करने में पर्याप्त नहीं था। परम्परागत बीज, मानसून पर निर्भरता, सीमित सिंचाई, कम उत्पादकता और खाद्यान्न संकट ने भारत को नई कृषि नीति अपनाने के लिए प्रेरित किया। 1960 के दशक के मध्य में उच्च उपज देने वाली बीज किस्मों, रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, नियंत्रित सिंचाई, आधुनिक कृषि यंत्रों और सरकारी संस्थागत सहायता पर आधारित कृषि विकास प्रक्रिया को आगे बढ़ाया गया। यही प्रक्रिया बाद में हरित क्रांति के रूप में विख्यात हुई।

हरियाणा का गठन 1966 में हुआ। उस समय राज्य की सामाजिक और आर्थिक संरचना मुख्य रूप से ग्रामीण तथा कृषि आधारित थी। हरियाणा की समतल भूमि, नहर सिंचाई की संभावनाएँ, भूजल संसाधन, दिल्ली और उत्तर भारत के बड़े बाजारों से निकटता तथा कृषि के प्रति ग्रामीण समाज की सक्रियता ने इसे हरित क्रांति के लिए उपयुक्त क्षेत्र बनाया। राज्य सरकार ने कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए सिंचाई, कृषि विस्तार, उन्नत बीज, उर्वरक, कृषि ऋण, मंडी व्यवस्था और पशुपालन विकास को महत्त्व दिया। फलस्वरूप हरियाणा का ग्रामीण क्षेत्र पारम्परिक निर्वाह कृषि से निकलकर आधुनिक, निवेश आधारित और बाजारोन्मुख कृषि अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर हुआ। 1966 से 2000 के मध्य हरियाणा में हुए परिवर्तन केवल खाद्यान्न उत्पादन की वृद्धि तक सीमित नहीं थे। इस अवधि में भूमि उपयोग, फसल संरचना, सिंचाई स्रोत, ग्रामीण श्रम, कृषक आय, पशुपालन, सहकारी ऋण, मंडी संबंध और ग्रामीण जीवन स्तर में भी गहरे परिवर्तन आए। जहाँ गेहूँ और धान का उत्पादन तेज गति से बढ़ा, वहीं दालों और अनेक पारम्परिक फसलों का महत्त्व घटा। कृषि में पूँजी और तकनीक की भूमिका बढ़ने से बड़े और मध्यम किसान अधिक लाभ प्राप्त कर सके, जबकि सीमांत किसान और भूमिहीन मजदूर नई चुनौतियों से प्रभावित हुए। इसलिए हरित क्रांति का अध्ययन केवल कृषि सफलता के रूप में नहीं, बल्कि ग्रामीण समाज और अर्थव्यवस्था के व्यापक ऐतिहासिक रूपांतरण के रूप में किया जाना आवश्यक है।

हरियाणा में हरित क्रांति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

हरियाणा की स्थापना के समय इसकी अर्थव्यवस्था में कृषि का केंद्रीय स्थान था। ग्रामीण जनजीवन खेती और पशुपालन से गहरे रूप में जुड़ा हुआ था। राज्य में भूमि का बड़ा भाग कृषि योग्य था, किन्तु उत्पादन की सीमा सिंचाई, तकनीकी संसाधनों और पूँजीगत निवेश की उपलब्धता से निर्धारित होती थी। हरित क्रांति ने इस परिस्थिति को बदलने के लिए एक

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

नया आधार प्रदान किया। उच्च उपज देने वाले गेहूँ और धान के बीजों ने तभी सफलता प्राप्त की जब उनके साथ सिंचाई, उर्वरक और कृषि मशीनों का उपयोग किया गया। हरियाणा में हरित क्रांति की सफलता के पीछे कई ऐतिहासिक कारण थे। राज्य की भूमि विस्तृत कृषि के लिए उपयुक्त थी। नहर प्रणाली तथा बाद में नलकूपों के विस्तार ने सिंचाई को विश्वसनीय बनाया। मंडियों और सड़कों के विकास से उत्पादित अनाज को बाजार तक पहुँचाना सरल हुआ। सरकारी खरीद और मूल्य समर्थन ने किसानों को यह भरोसा दिया कि गेहूँ और धान का उत्पादन आर्थिक रूप से सुरक्षित रहेगा। कृषि विस्तार सेवाओं और वैज्ञानिक संस्थानों ने उन्नत खेती के ज्ञान को ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचाया। हरित क्रांति के प्रारम्भिक दशकों में हरियाणा के कृषक समाज ने कृषि को केवल पारिवारिक उपभोग का साधन मानने के स्थान पर आय और बाजार से जुड़ी गतिविधि के रूप में देखना शुरू किया। इससे उत्पादन की मात्रा, खेती की लागत, ऋण की आवश्यकता और फसलों के चयन में परिवर्तन आया। राज्य की कृषि धीरे–धीरे खाद्यान्न अधिशेष उत्पन्न करने वाली व्यवस्था में रूपांतरित हो गई।

कृषि उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि

हरियाणा में हरित क्रांति का सर्वाधिक प्रत्यक्ष प्रभाव कृषि उत्पादन की वृद्धि के रूप में दिखाई देता है। 1966–67 में राज्य का कुल खाद्यान्न उत्पादन 25.92 लाख टन था। 1999–2000 तक यह बढ़कर 130.65 लाख टन हो गया। इस प्रकार लगभग साढ़े तीन दशकों में कुल खाद्यान्न उत्पादन पाँच गुना से अधिक हो गया। यह वृद्धि केवल कृषि योग्य क्षेत्र के विस्तार के कारण नहीं हुई, बल्कि प्रति इकाई भूमि अधिक उत्पादन, बहुफसली खेती, सिंचाई तथा आधुनिक तकनीक के बढ़ते प्रयोग के कारण संभव हुई। गेहूँ हरित क्रांति की सफलता का सबसे प्रमुख आधार बना। 1966–67 में हरियाणा में गेहूँ का उत्पादन 10.59 लाख टन था, जो 1999–2000 में बढ़कर 96.50 लाख टन हो गया। अर्थात् गेहूँ उत्पादन में नौ गुना से अधिक वृद्धि हुई। इसके पीछे उन्नत किस्मों, रबी सिंचाई, उर्वरक प्रयोग, मशीन द्वारा समय पर बुवाई तथा सरकारी खरीद की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। धान का विस्तार भी अत्यधिक प्रभावशाली रहा। 1966–67 में धान का उत्पादन केवल 2.23 लाख टन था, जो 1999–2000 में बढ़कर 25.83 लाख टन हो गया। धान जैसी अधिक जल माँगने वाली फसल का इस स्तर तक विस्तार यह दर्शाता है कि हरियाणा की कृषि व्यवस्था में सिंचाई और बाजार समर्थन कितने महत्त्वपूर्ण हो चुके थे। गेहूँ और धान की संयुक्त सफलता ने हरियाणा को राष्ट्रीय खाद्यान्न सुरक्षा व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण स्थान दिलाया।

खेती के क्षेत्र और फसल संरचना में परिवर्तन

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

हरित क्रांति ने हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्रों में फसलों के चयन को भी बदल दिया। 1966–67 में गेहूँ के अंतर्गत 7.43 लाख हेक्टेयर भूमि थी, जो 1999–2000 में बढ़कर 23.17 लाख हेक्टेयर हो गई। इसी प्रकार धान का क्षेत्र 1.92 लाख हेक्टेयर से बढ़कर 10.83 लाख हेक्टेयर हो गया। सकल बोया गया क्षेत्र भी 45.99 लाख हेक्टेयर से बढ़कर 60.29 लाख हेक्टेयर हो गया। यह परिवर्तन बताता है कि खेती केवल भूमि विस्तार पर आधारित नहीं रही, बल्कि एक ही भूमि से अधिक उत्पादन लेने की प्रणाली विकसित हुई। फसल संरचना में गेहूँ और धान की बढ़ती प्रधानता ने पारम्परिक फसल व्यवस्था को पीछे धकेल दिया। हरियाणा में हरित क्रांति से पूर्व बाजरा, ज्वार, चना, दालें, तिलहन और अन्य स्थानीय फसलें ग्रामीण उत्पादन तथा भोजन व्यवस्था का महत्त्वपूर्ण भाग थीं। आर. बी. सिंह के अध्ययन के अनुसार खरीफ मौसम में धान की हिस्सेदारी 1965–66 के 13 प्रतिशत से बढ़कर 1995–96 में 34 प्रतिशत हो गई, जबकि बाजरे की हिस्सेदारी 46 प्रतिशत से घटकर 27 प्रतिशत रह गई। रबी मौसम में गेहूँ की हिस्सेदारी 43 प्रतिशत से बढ़कर 64 प्रतिशत हो गई, जबकि चने की हिस्सेदारी 42 प्रतिशत से घटकर 14 प्रतिशत रह गई।

दलहनी फसलों का ह्रास विशेष रूप से चिंताजनक रहा। आधिकारिक संशोधित आँकड़ों में 1966–67 में कुल दाल उत्पादन 5.63 लाख टन दर्ज है, जो 1999–2000 में घटकर केवल 0.78 लाख टन रह गया। यह गिरावट इस बात का संकेत है कि लाभकारी मूल्य, सरकारी खरीद और सिंचाई आधारित उत्पादन व्यवस्था ने किसानों को गेहूँ और धान की ओर आकर्षित किया, जबकि दालें अपेक्षाकृत उपेक्षित होती गईं। इस परिवर्तन का प्रभाव केवल कृषि आय पर नहीं, बल्कि ग्रामीण आहार, पोषण और मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरता पर भी पड़ा।

सिंचाई का विस्तार और कृषि की नई आधारभूत संरचना

हरित क्रांति की सफलता का सबसे आवश्यक आधार सिंचाई था। उच्च उपज देने वाली बीज किस्में नियमित और पर्याप्त जलापूर्ति के बिना अधिक उत्पादन नहीं दे सकती थीं। हरियाणा में 1966–67 में शुद्ध सिंचित क्षेत्र 12.93 लाख हेक्टेयर था, जो 1999–2000 में बढ़कर 28.88 लाख हेक्टेयर हो गया। इसी अवधि में शुद्ध बोए गए क्षेत्र में सिंचित भूमि का अनुपात 37.8 प्रतिशत से बढ़कर 81.3 प्रतिशत हो गया। इस प्रकार खेती का स्वरूप वर्षा पर निर्भर व्यवस्था से बदलकर नियंत्रित जलापूर्ति पर आधारित गहन कृषि व्यवस्था में परिवर्तित हुआ। आरम्भिक वर्षों में सरकारी नहरें सिंचाई का मुख्य साधन थीं। 1966–67 में सरकारी नहरों से सिंचित क्षेत्र 9.91 लाख हेक्टेयर था। समय के साथ नलकूपों का महत्त्व तेजी से बढ़ा। 1999–2000 में सरकारी नहरों से सिंचित क्षेत्र 14.41 लाख हेक्टेयर था, जबकि नलकूपों से सिंचित क्षेत्र 14.32 लाख हेक्टेयर तक पहुँच चुका था। इससे स्पष्ट होता है कि

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

सिंचाई में निजी निवेश और भूजल उपयोग की भूमिका अत्यधिक बढ़ गई थी। किसान अपने नलकूपों के माध्यम से फसल को समय पर पानी उपलब्ध करा सकते थे, जिससे गेहूँ और धान का नियमित उत्पादन सम्भव हुआ। सिंचाई के विस्तार ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था में स्थिरता उत्पन्न की। फसल जोखिम कम हुआ, एक वर्ष में दो फसलें लेने की संभावना बढ़ी और बाजार के लिए अधिशेष उत्पादन विकसित हुआ। फिर भी, भूजल पर बढ़ती निर्भरता ने दीर्घकाल में संकट भी उत्पन्न किया। जिन क्षेत्रों में धान और गेहूँ का चक्र अधिक प्रभावी हुआ, वहाँ भूजल का दोहन बढ़ा। कुछ क्षेत्रों में भूजल स्तर गिरा, जबकि नहर सिंचित और अपर्याप्त जल निकास वाले क्षेत्रों में जलभराव तथा लवणता जैसी समस्याएँ सामने आईं।

उर्वरक, उन्नत बीज और कृषि तकनीकीकरण

हरित क्रांति के दौरान कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिए उन्नत बीजों और रासायनिक उर्वरकों का संयुक्त प्रयोग किया गया। हरियाणा में उर्वरक कृषि उत्पादन वृद्धि का महत्त्वपूर्ण साधन बना। हरियाणा सरकार के आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार राज्य में प्रति हेक्टेयर उर्वरक उपभोग 1980–81 में 42 किलोग्राम था, जो 1999–2000 तक बढ़कर 150 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया। इससे स्पष्ट होता है कि कृषि उत्पादन प्राकृतिक खाद और पारम्परिक विधियों पर आधारित रहने के स्थान पर बाहरी रासायनिक निवेश पर अधिक निर्भर हो गयज्ञं उन्नत बीजों ने गेहूँ और धान की उत्पादकता को बढ़ाया, लेकिन उनके साथ सिंचाई और उर्वरक का नियमित उपयोग आवश्यक था। इससे कृषि में लागत बढ़ी और किसानों को बीज, खाद, कीटनाशक, डीजल तथा विद्युत जैसी वस्तुओं पर अधिक व्यय करना पड़ा। खेती धीरे–धीरे नकद निवेश और ऋण आधारित व्यवस्था बन गई। इसका लाभ उन किसानों को अधिक मिला जिनके पास पर्याप्त भूमि, सिंचाई साधन और पूँजी उपलब्ध थी। तकनीकीकरण ने खेती के समयबद्ध संचालन को भी संभव बनाया। ट्रैक्टर, पम्पसेट, थ्रेशर और हार्वेस्टर जैसे यंत्रों ने जुताई, बुवाई, सिंचाई और कटाई के कार्यों को तेज किया। गेहूँ की कटाई के बाद शीघ्र अगली कृषि गतिविधि करना तथा धान के बाद समय पर गेहूँ की बुवाई करना मशीन आधारित खेती से अधिक संभव हुआ। इस प्रकार तकनीकी विकास ने गेहूँ–धान प्रणाली को मजबूत किया और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को उत्पादन केंद्रित तथा व्यावसायिक बनाया।

ग्रामीण बाजार, मंडी व्यवस्था और ऋण संरचना

हरित क्रांति से पहले ग्रामीण खेती का बड़ा भाग घरेलू उपभोग और स्थानीय आवश्यकताओं से जुड़ा हुआ था। उत्पादन बढ़ने के साथ खेती बाजार के लिए की जाने लगी। गेहूँ, धान, कपास, तिलहन और गन्ना जैसी फसलों का उत्पादन कृषक परिवारों के लिए नकद आय का माध्यम बना। हरियाणा में मंडियों, ग्रामीण सड़कों, भंडारण सुविधाओं और सरकारी खरीद प्रणाली का विकास कृषि अधिशेष के विपणन के लिए आवश्यक था। 1999–2000 के

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

आधिकारिक आर्थिक सर्वेक्षण में हरियाणा राज्य कृषि विपणन बोर्ड की भूमिका का उल्लेख किया गया है। बोर्ड को ग्रामीण सड़कों के निर्माण और मरम्मत के साथ नई मंडियों के विकास तथा मौजूदा मंडियों में किसानों के लिए बेहतर सुविधाएँ उपलब्ध कराने का कार्य सौंपा गया था। इसी अवधि में मंडी व्यापार को बढ़ावा देने के लिए 21 वस्तुओं पर बाजार शुल्क जनवरी 2000 से दो प्रतिशत से घटाकर एक प्रतिशत किया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि राज्य कृषि उत्पादन के साथ उसके विपणन और व्यापार को भी प्रोत्साहित कर रहा था। आधुनिक कृषि व्यवस्था में ऋण की भूमिका भी बढ़ी। उन्नत बीज, उर्वरक, सिंचाई, मशीन किराया और कीटनाशक खरीदने के लिए किसानों को नकद पूँजी की आवश्यकता थी। आधिकारिक सर्वेक्षण के अनुसार 1999–2000 में फसल ऋण वितरण लगभग ₹2,097. 60 करोड़ तक पहुँचने का अनुमान था, जबकि पिछले वर्ष यह ₹1,578.70 करोड़ था। सहकारी संस्थाओं, मिनी बैंकों और प्राथमिक कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंकों के माध्यम से ग्रामीण ऋण व्यवस्था का विस्तार हुआ। इस प्रकार हरित क्रांति ने कृषि उत्पादन को वित्तीय संस्थाओं और औपचारिक बाजार व्यवस्था से जोड़ दिया।

पशुपालन और ग्रामीण आय के पूरक साधन

हरियाणा की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुपालन का परम्परागत महत्त्व रहा है। हरित क्रांति के बाद यह केवल घरेलू उपयोग का साधन नहीं रहा, बल्कि आय और रोजगार की पूरक गतिविधि के रूप में विकसित हुआ। फसल उत्पादन बढ़ने से पशुओं के लिए भूसे और अन्य चारे की उपलब्धता में सुधार हुआ। साथ ही, कृषि से प्राप्त नकद आय के कारण उन्नत पशु नस्लों, पशु चिकित्सा सेवाओं और दूध विपणन में निवेश बढ़ा। हरियाणा के आर्थिक सर्वेक्षण 1999–2000 में पशुपालन को ग्रामीण आय–सृजन, ग्रामीण उत्थान तथा रोजगार–विस्तार का एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र बताया गया है। रिपोर्ट के अनुसार उस समय राज्य में प्रति व्यक्ति प्रतिदिन दूध उपलब्धता 621 ग्राम थी और पशुपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था में उद्योग का रूप ग्रहण कर चुका था। हरियाणा पशुधन विकास बोर्ड की स्थापना का उद्देश्य गाय और भैंस की नस्ल सुधार, मुर्रा नस्ल के संरक्षण तथा कृत्रिम गर्भाधान जैसी सुविधाओं का विस्तार करना था। पशुपालन का महत्त्व छोटे और सीमांत किसानों के लिए विशेष रूप से अधिक था। जिन परिवारों के पास सीमित कृषि भूमि थी, वे दूध उत्पादन, पशुपालन और दैनिक नकद आय के माध्यम से अपनी आर्थिक स्थिति को सहारा दे सकते थे। ग्रामीण महिलाओं की भूमिका पशुपालन में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रही, क्योंकि पशुओं की देखभाल, चारा, दूध दुहना और घरेलू स्तर पर दुग्ध उपयोग जैसे कार्य मुख्यतः महिलाओं से जुड़े थे। इस प्रकार ग्रामीण परिवार की अर्थव्यवस्था में कृषि और पशुपालन एक–दूसरे के पूरक रूप में विकसित हुए।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

ग्रामीण जीवन स्तर और सामाजिक परिवर्तन

कृषि उत्पादन और आय में वृद्धि ने हरियाणा के ग्रामीण समाज में जीवन स्तर और सामाजिक आकांक्षाओं को भी प्रभावित किया। हरित क्रांति के परिणामस्वरूप अनेक किसान परिवारों के पास बाजार में बेचने योग्य अधिशेष उत्पादन उपलब्ध हुआ। इससे पक्के मकानों, कृषि मशीनों, ट्यूबवेलों, परिवहन साधनों, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं और घरेलू उपभोक्ता वस्तुओं पर व्यय बढ़ा। गाँवों का संबंध नजदीकी कस्बों और मंडियों से अधिक गहरा हुआ। ग्रामीण समाज में आर्थिक प्रतिष्ठा के नए आधार विकसित हुए। पहले भूमि का स्वामित्व ग्रामीण शक्ति का प्रमुख संकेतक था, किन्तु अब भूमि के साथ ट्रैक्टर, नलकूप, आधुनिक कृषि यंत्र, मंडी संपर्क और नकद आय भी प्रतिष्ठा के प्रतीक बनने लगे। जो किसान नई तकनीक अपनाने में सक्षम थे, उनके सामाजिक प्रभाव में वृद्धि हुई। इस परिवर्तन ने ग्रामीण समाज में आर्थिक गतिशीलता को बढ़ाया, लेकिन साथ ही वर्गीय अंतर को भी अधिक स्पष्ट किया। कृषि आय में वृद्धि से शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी। ग्रामीण परिवारों ने अपने बच्चों को विद्यालयों और महाविद्यालयों तक भेजना आरम्भ किया। सरकारी सेवाओं, व्यापार और गैर–कृषि रोजगार की आकांक्षा ग्रामीण युवाओं में बढ़ी। इस प्रकार हरित क्रांति ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को केवल खेती तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे शिक्षा, परिवहन, व्यापार और शहरी अवसरों से जोड़ने की प्रक्रिया को भी गति दी।

कृषि मजदूर, छोटे किसान और आर्थिक असमानता

हरित क्रांति का प्रभाव सभी ग्रामीण वर्गों पर समान रूप से नहीं पड़ा। बड़े और मध्यम किसान नई कृषि तकनीक को शीघ्र अपनाने में सक्षम थे, क्योंकि उनके पास भूमि, पूँजी, सिंचाई साधन और ऋण प्राप्त करने की क्षमता अधिक थी। वे गेहूँ और धान जैसी बाजारोन्मुख फसलों का बड़े पैमाने पर उत्पादन कर सके और सरकारी खरीद व्यवस्था से लाभ प्राप्त कर सके। इसके विपरीत, छोटे और सीमांत किसानों को बढ़ती कृषि लागत का सामना करना पड़ा। उन्नत बीज, रासायनिक खाद, कीटनाशक, नलकूप, बिजली, डीजल और मशीन सेवाओं की लागत ने उनके लिए खेती को जोखिमपूर्ण बनाया। सीमित भूमि के कारण उनका बाजार योग्य अधिशेष कम था, जबकि उत्पादन लागत अधिक होती गई। कई मामलों में छोटे किसानों को ऋण पर निर्भर रहना पड़ा।

भूमिहीन कृषि मजदूरों की स्थिति भी जटिल रही। फसल तीव्रता बढ़ने के कारण प्रारम्भिक स्तर पर कुछ कृषि कार्यों में रोजगार बढ़ा, किन्तु यंत्रीकरण के विस्तार ने जुताई, कटाई और मड़ाई जैसे कार्यों में श्रम की आवश्यकता को कम किया। ट्रैक्टर और मशीनों ने खेती को तेज तथा कुशल बनाया, परन्तु पारम्परिक श्रमिक रोजगार के अवसरों को सीमित भी किया। परिणामस्वरूप अनेक ग्रामीण मजदूरों को निर्माण कार्य, परिवहन, ईंट–भट्टों, डेयरी, छोटी

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

सेवाओं और निकटवर्ती नगरों की ओर रोजगार के लिए जाना पड़ा। इस प्रकार हरित क्रांति ने ग्रामीण समृद्धि को बढ़ाया, किन्तु यह समृद्धि सभी समुदायों और वर्गों में समान रूप से वितरित नहीं हुई। संसाधन सम्पन्न किसान अधिक लाभान्वित हुए, जबकि सीमांत किसान और श्रमिक नई आर्थिक संरचना में अपेक्षाकृत अधिक असुरक्षित बने रहे।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर पर्यावरणीय प्रभाव

हरित क्रांति की उत्पादन उपलब्धियों के साथ हरियाणा में पर्यावरणीय चुनौतियाँ भी उभरने लगीं। गेहूँ और धान की निरंतर खेती, सिंचाई का तीव्र उपयोग, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर निर्भरता तथा फसल विविधता की कमी ने भूमि और जल संसाधनों पर दबाव बढ़ाया। आर. बी. सिंह के अध्ययन में हरियाणा को हरित क्रांति से उत्पन्न पर्यावरणीय समस्याओं का महत्त्वपूर्ण उदाहरण माना गया है। इस अध्ययन के अनुसार हरियाणा में मिट्टी की जैविक गुणवत्ता में गिरावट, रासायनिक निवेश का तीव्र विस्तार, भूजल में नाइट्रेट और फास्फेट प्रदूषण, जलभराव, लवणता, क्षारीयता तथा जैव विविधता में कमी जैसी समस्याएँ सामने आईं। निरंतर गेहूँ–धान फसल चक्र ने मिट्टी में प्रमुख और सूक्ष्म पोषक तत्त्वों के संतुलन को प्रभावित किया। अध्ययन में यह भी बताया गया है कि धान–गेहूँ क्षेत्र में सिंचाई की अत्यधिक निर्भरता के कारण कुछ जिलों में भूजल स्तर गिरने लगा, जबकि अन्य क्षेत्रों में जलभराव की समस्या बढ़ी।

हरियाणा सरकार के आर्थिक सर्वेक्षण ने भी स्वीकार किया कि राज्य में धान–गेहूँ फसल चक्र के प्रभुत्व के कारण मिट्टी की उर्वरता में गिरावट और भूजल स्तर पर दबाव उत्पन्न हुआ। यह तथ्य महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह दर्शाता है कि हरित क्रांति की समस्याएँ केवल बाद के विश्लेषणों का विषय नहीं थीं, बल्कि सरकारी नीति–निर्माण में भी इन्हें पहचाना जाने लगा था। फसल विविधता का कम होना दीर्घकालीन दृष्टि से एक गंभीर चुनौती थी। दालें, चना, बाजरा और ज्वार जैसी फसलें कम जल, स्थानीय भोजन और मिट्टी के स्वास्थ्य के लिए उपयोगी थीं। इनके स्थान पर अधिक जल और अधिक रासायनिक निवेश माँगने वाली फसलों का विस्तार कृषि को पर्यावरणीय रूप से असंतुलित बना सकता था। इसलिए 2000 तक आते–आते हरियाणा की कृषि नीति के सामने यह प्रश्न स्पष्ट हो चुका था कि केवल अधिक उत्पादन पर्याप्त नहीं है, बल्कि संसाधनों की रक्षा और फसल विविधता भी आवश्यक है।

हरित क्रांति की उपलब्धियाँ और सीमाएँ

हरित क्रांति की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि इसने हरियाणा को कृषि उत्पादन के क्षेत्र में अग्रणी राज्य बनाया। खाद्यान्न उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, गेहूँ और धान का अधिशेष बाजार में पहुँचा, किसानों की नकद आय बढ़ी और राज्य राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

प्रणाली का महत्त्वपूर्ण अंग बना। सिंचाई विस्तार, कृषि तकनीक, मंडी व्यवस्था, ग्रामीण सड़कों, सहकारी ऋण और पशुपालन विकास ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गतिशील बनाया। इसके बावजूद, इस विकास प्रक्रिया की सीमाएँ भी स्पष्ट रहीं। प्रथम, कृषि का आधार कुछ चुनिंदा फसलों पर केंद्रित हो गया। द्वितीय, छोटी जोत वाले किसानों के लिए उत्पादन लागत और ऋण का दबाव बढ़ा। तृतीय, कृषि यंत्रीकरण ने कुछ श्रम अवसरों को प्रभावित किया। चतुर्थ, सिंचाई और रासायनिक उर्वरकों के अधिक उपयोग ने प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव डाला। पंचम, दालों तथा पारम्परिक मोटे अनाजों का ह्रास ग्रामीण पोषण और कृषि स्थिरता दोनों के लिए चुनौती बना। इसलिए हरित क्रांति को न तो केवल सफलता की कहानी माना जा सकता है और न ही केवल संकट की प्रक्रिया। यह ऐसी ऐतिहासिक परिवर्तनकारी घटना थी जिसने हरियाणा की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में समृद्धि, आधुनिकीकरण और बाजार विस्तार को जन्म दिया, साथ ही सामाजिक विषमता और पर्यावरणीय असंतुलन की नई समस्याएँ भी उत्पन्न कीं।

निष्कर्ष

1966 से 2000 तक हरियाणा की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का इतिहास हरित क्रांति के प्रभाव से उत्पन्न व्यापक परिवर्तन का इतिहास है। राज्य गठन के प्रारम्भिक वर्षों में हरियाणा मुख्यतः कृषि आधारित ग्रामीण प्रदेश था। उत्पादन सीमित था, सिंचाई का विस्तार अधूरा था और खेती का स्वरूप अपेक्षाकृत पारम्परिक था। हरित क्रांति ने उन्नत बीज, सिंचाई, रासायनिक उर्वरक, कृषि यंत्रीकरण, सरकारी खरीद, ऋण और मंडी व्यवस्था के माध्यम से इस कृषि प्रणाली को बदल दिया। इस परिवर्तन के परिणामस्वरूप हरियाणा ने खाद्यान्न उत्पादन में उल्लेखनीय प्रगति की। 1966–67 से 1999–2000 तक कुल खाद्यान्न उत्पादन 25.92 लाख टन से बढ़कर 130.65 लाख टन हो गया। गेहूँ और धान की वृद्धि ने राज्य को भारत की खाद्य सुरक्षा व्यवस्था में विशेष स्थान प्रदान किया। सिंचाई के विस्तार, तकनीकी खेती और बाजार संबंधों ने ग्रामीण आय तथा उत्पादन क्षमता को बढ़ाया। पशुपालन और ग्रामीण संस्थाओं ने भी इस विकास में पूरक भूमिका निभाई।

फिर भी, इस प्रगति का दूसरा पक्ष भी महत्त्वपूर्ण है। दालों और पारम्परिक फसलों का क्षेत्र घटा, गेहूँ–धान चक्र पर निर्भरता बढ़ी, कृषि लागत में वृद्धि हुई, ग्रामीण वर्गों में आर्थिक अंतर बना रहा और जल तथा मिट्टी संसाधनों पर दबाव बढ़ा। इस प्रकार हरित क्रांति ने हरियाणा को कृषि सम्पन्न राज्य बनाया, किन्तु भविष्य के लिए टिकाऊ कृषि और समावेशी ग्रामीण विकास की आवश्यकता को भी स्पष्ट किया। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हरित क्रांति हरियाणा की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में परिवर्तन का निर्णायक ऐतिहासिक माध्यम रही। इसने ग्रामीण उत्पादन, बाजार और जीवन स्तर को नई दिशा दी, परन्तु इसके

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

दीर्घकालीन परिणामों ने यह भी सिद्ध किया कि कृषि विकास तभी सार्थक और स्थायी हो सकता है जब आर्थिक समृद्धि के साथ सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय संतुलन को भी समान महत्त्व दिया जाए।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1. यादव, शिखा एवं यादव, सुभाष. (2020). भारत में हरित क्रांति और खाद्य सुरक्षाः एक समीक्षा. नेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट, 5(7), पृ. 63–68.
2. कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा सरकार. (2000). हरियाणा में कृषि विकास एवं फसल उत्पादन संबंधी वार्षिक प्रतिवेदन. हरियाणा सरकार, चंडीगढ़।
3. सिंह, जोगिंदर. (2018). हरियाणा के सकल घरेलू उत्पाद पर हरित क्रांति का प्रभाव. इनोवेटिव रिसर्च थॉट्स, 4(3), पृ. 147–150.
4. सिंह, आर. बी. (2000). कृषि विकास के पर्यावरणीय परिणामः भारत के हरित क्रांति राज्य हरियाणा का एक अध्ययन. एग्रीकल्चर, इकोसिस्टम्स एण्ड एनवायरनमेंट, 82(1–3), पृ. 97–103.
5. हरियाणा राज्य कृषि विपणन बोर्ड. (2000). कृषि विपणन, मंडी विकास एवं ग्रामीण सड़क विकास संबंधी प्रतिवेदन. हरियाणा सरकार, पंचकूला।
6. नेल्सन, ए. आर. एल. एलियेजर, रविचंद्रन, के. एवं एंटनी, यू. (2019). भारत की देशज फसलों पर हरित क्रांति का प्रभाव. जर्नल ऑफ एथनिक फूड्स, 6(8), पृ. 8–10.
7. आर्थिक एवं सांख्यिकीय विश्लेषण विभाग, हरियाणा सरकार. (2000). हरियाणा का आर्थिक सर्वेक्षण 1999–2000. हरियाणा सरकार, चंडीगढ़।